SJIF Impact Factor - 5.67 E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक

प्रोफेसर रजनी शिखरे

प्राचार्य

र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई

जि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Scanned with CamScanner

AMRJ
E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	विवाह विच्छेद के बच्चों पर दुष्प्रभाव (विशेष संदर्भ: आपका बंटी)	डॉ.रजनी शिखरे प्रा.हिरा पोटकुले	05
2	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित वृद्ध विमर्श (समय सरगम और गिलिगडू : विशेष संदर्भ)	प्रो.डॉ.जिजाबराव व्ही. पाटील प्रा.दिलीप पंडीत पाटील	08
3	नारी जीवन की यथार्थता का चिंतन ('दहेज' प्रथा और 'बलात्कार' की समस्या के विशेष संदर्भ में)	डॉ. आर. के. जाधव	10
4	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में स्त्री विमर्श	प्रो. रजनी शिखरे / संतोष नागरे	13
5	आजादी के 75 वर्ष के बाद भी हिंदी लोकगीतों का महत्त्व	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	16
6	आज़ादी का अमृत महोत्सव और बदलता महानगरीय परिवेश (कुसुम अंसल की कहानी के संदर्भ में)	डॉ. सुनील बापू बनसोडे	18
7	स्वातंत्रोत्तर हिंदी कविता में कृषक और उसकी संघर्ष चेतना	डॉ.सपना तिवारी	21
8	'रागदरबारी' उपन्यास की प्रासंगिकता'	डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	25
9	हिंदी उपन्यास और आदिवासी समुदाय का यथार्थ चित्रण	प्रा.डॉ शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	29
10	लीलाधर जगूड़ी का काव्य: आज़ादी का मोहभंग के परिपेक्ष्य में	डॉ. शरद शेषराव कदम	32
11	गिलिगडू उपन्यास में महानगरीय बोध	प्रा. शुभदा शिवाजी आरडे	35
12	हिन्दी साहित्य में सामाजिक तथा राष्ट्रीय चिंतन	डॉ. सुमेध पी. नागदेवे	37
13	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविता का योगदान	श्रीमती सुपर्णा गंगाधर संसुद्धी	41
14	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य	समृद्धि संजय सुर्वे डॉ .अनिल विश्वनाथ काळे	43
15	स्वाधीनता के बाद हिंदी कहानी का विकास	डॉ. शिवाजी गंगाधर सुरवसे	45
16	स्वातंत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज : 'पूरब खिले पलाश'	संतोष नागरे	47
17	मोहनदास नैमिशराय के आत्मकथा में चित्रित दलित समस्याएँ (अपने – अपने पिंजरे के विशेष संदर्भ में)	प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	51
18	नारी की चिरन्तन पीड़ा और अन्याय की अभिव्यक्ति : अहल्या	डॉ. मारोती यमुलवाड	54
19	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में आदिवासी विमर्श	प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर	57
20	परिवार विघटन की त्रासदी और उदय प्रकाश की कहानियॉ	डॉ.युवराज राजाराम मुळये डॉ.काकासाहेब भागुराम गंगणे	59
21	आजादी के 75 वर्ष का कथा साहित्य	डॉ. पिरू आर. गवळी	62
22	'कुमारजीव'में चित्रित विविध आयाम	सुश्री प्रतिक्षा शिवाजी तनपुरे	65
23	इक्कीसवी शती की महिला कहानीकारों के कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी विमर्श	प्रा. सपना पाटील	68
24	स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिंदी बाल कहानी-साहित्य में बाल-मनोविज्ञान	इगडे शितल कचरु	70
25	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी आत्मकथा साहित्य	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	74
26	"रागदरबारी" उपन्यास में चित्रित व्यंग्यात्मक यथार्थ	कु. माधुरी सुरेश ठाकरे	78
27	नागार्जुन की कविताओं में विषय विविधा	डॉ. मिलिंद साळवे	80

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

01

विवाह विच्छेद के बच्चों पर दुष्प्रभाव
(विशेष संदर्भः आपका बंटी)

डॉ.रजनी शिखरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई

प्रा.हिरा पोटकुले
हिंदी विभाग,
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी

मध्यप्रदेश के भानपुरा नगर में 1931 में जन्मी मन्नू भंडारी हिंदी की लोकप्रिय लेखिका है।मन्नू जी स्वतंत्रता के बाद भारत के मुख्य लेखिकाओं में से एक थी। मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' एक कालजयी उपन्यास है। जिसमें लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवार में पति– पत्नी के संबंध विच्छेद के कारण एक बच्चे का बालमन, उसकी निगाहों से घायल होती संवेदना का बेहद मार्मिक चित्रण किया है। विवाह विच्छेद की यह स्थिति एक कोमल, निरीह बच्चे की दुनिया का भयावह दुः स्वप्न बन जाती है और यह बच्चा ऐसी यातनाओं से गुजरता है जिसे वह न जान पाता है न समझ पाता है। पारिवारिक त्रासदी से उपजी स्थितियों के कारण सभी एक– दूसरे में ऐसे उलझे हैं कि यह स्थितियां सभी के लिए यातना बन जाती है। पति–पत्नी के इस द्वंद्व में सबसे अधिक वही पिसा जाता है जो नितांत निर्दोष, निरीह और असुरक्षित है, वह है एक बच्चा बंटी।

बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ– बूझ के लिए चर्चित, प्रशंसित 'आपका बंटी' का हर पृष्ठ मर्मस्पर्शी और विचारोत्तेजक है। स्त्री (शकुन) की जायज महत्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता पुरुष (अजय) के लिए चुनौती बन जाती है, परिणामस्वरूप दांपत्य तनाव दोनों को अलगाव तक लाकर छोड़ता है। आपका बंटी की कहानी समाज में निरंतर अपनी जगह बनाती और अपना कद बढ़ाती 'नई–स्त्री' और इससे चोट खाते पुरुष के अहं का सत्य है। शकुन और अजय का प्रेम विवाह हुआ था। विवाह के 10 वर्ष बाद भी वह एक– दूसरे को अच्छी तरह से समझ नहीं पाए। उनके दांपत्य जीवन की नीरसता से खिन्न होकर दोनों अलग हो जाते हैं। लेकिन शकुन और अजय ने जिंदगी के ऐसे मोड़ पर अलग होने का निर्णय लिया जब उनका एक कोमल बेटा भी उनके साथ है। नौ साल का बंटी चौथी कक्षा में पढ़ता है। नौ साल के इस कोमल मन पर 'तलाक' शब्द का आघात होता है जो उसके जीवन की सबसे बड़ी समस्या बनकर सामने आती है, जिसे वह ना जान पाता है न ही समझ पाता है। शकुन आर अजय आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक– दूसरे से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन बंटी क्या करें? वह तो माता–पिता दोनों से समान रूप से जुड़ा है। बावजूद इसके वह अपने मम्मी के साथ रहता है।

माता– पिता ही अपने बच्चों के पहले गुरू होते है। उनको देखकर बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं और जिंदगी में आगे बढ़ते हैं। कहते हैं ना माता–पिता की परछाई उनके बच्चों में दिखाई देती है। मनु जी ने आपका बंटी में जो पारिवारिक स्थितियों का मार्मिक चित्रण किया है वह आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है। जिनके प्रेम विवाह को दस वर्ष हो चुके हैं एक बच्चा भी है।दस वर्षों के बाद उनके रिश्ते में मनमुटाव उत्पन्न होता है और उनके रिश्ते की डोर कमजोर हो जाती है। एक– दूसरे को पराजित करने की भावना उत्पन्न होती है। "अजय को ना पाने का दंश यह नहीं है, बल्कि दंश शायद इस बात का है कि किसी और ने अजय से वह सब कुछ क्यों पाया जो उसका प्राप्य था। या कि इस बात का था कि वह सब कुछ तोड़– ताड़कर निकलती और अजय उसके लिए दुखी होता, छटपटाता। साथ नहीं रहते रह सकते थे, इसलिए साथ नहीं रह रहे हैं, स्थिति तब भी वैसी ही रहती, पर फिर भी कितना कुछ बदल गया होता! यदि अजय के साथ मीरा ना होती बल्कि उसके अपने साथ कोई होता.. सच पूछा जाए तो अजय के साथ न रह पाने का दंश नहीं है, वरन अजय को हरा न पाने की चुभन है यह, जो उसे उठते–बैठते सालती रहती है।"(1) शकुन जब दिल से विचार करती हैं तो अपना ही व्यवहार उसे गलत लगता है परंतु उसका दिमाग उसे मान्य नहीं करता। परिणामतः शकुन मानसिक यातनाओं को भोगती है। निश्चित रूप से इसका दुष्प्रभाव उसके बच्चे पर भी पड़ता है। परंतु यहां के हालात इस प्रकार है कि खुद के सामने बच्चे का कोमल, निरीह चेहरा भी अस्पष्ट हो जाता है। माता– पिता ही अपने बच्चों को नजरअंदाज करके उसे अपने तरीके से बदलते स्थितियों में ढालने की कोशिश करते हैं।

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

बंटी को बंटी टीटू से पता चलता है कि उसके मम्मी– पापा का तलाक हो गया है। टीटू के इस तरह बात करने से बंटी भीतर ही भीतर अपने आप को अपमानित महसूस करता है। इस स्थिति के कारण इस छोटे से बच्चे के मन में अनेकों सवाल उत्पन्न होते है– पर मम्मी– पापा की लड़ाई क्यों हुई? मम्मी कभी पापा की बात नहीं करती? पापा मिलने आते हैं तो घर में ना रहते हुए सर्किट हाउस में ठहरते हैं? वे न मम्मी से बात करते हैं ना उसे बुलाते हैं? क्या बड़े–बड़े लोग भी एक– दूसरे से लड़ते हैं? कुट्टी करते हैं? ऐसी लड़ाई जिसमें कभी दोस्ती ही ना हो? क्या मम्मी को पापा की याद नहीं आती? पापा को मम्मी की याद नहीं आती? तलाक में फिर क्या दोस्ती हो ही नहीं सकती? ऐसे अनगिनत प्रश्न उसके दिमाग में घूमते रहते हैं। खेलने– कूदने की उम्र में यह 9 साल का बच्चा बड़े–बड़े सवालों का जवाब ढूंढने में लग जाता है जिसकी उसे समझ तक नहीं है। बंटी का बालमन मम्मी और पापा के बीच दोस्ती करा देने की सह– कल्पना करता है। अजय जब बंटी को अपने साथ कलकत्ता चलने की बात करता है तो बंटी कहता है 'मम्मी चलेगी तो मैं चलूंगा।' मम्मी और पापा को मिलाने के लिए बंटी मन ही मन सोचता है। ''पापा को देखकर मम्मी को कैसा लगेगा? एकदम खुश हो जाएगी। वह खींचकर पापा को अंदर ले जाएगा और मम्मी का हाथ, पापा के हाथ मिला देगा– चलो कुट्टी खतम। फिर मम्मी और वह मिलकर पापा को जाने ही नहीं देंगे।''(2) एक छोटा सा बच्चा अगर मम्मी– पापा के अलग होने पर उन्हें फिर से मिलाने की सोचता है तो पति– पत्नी अपने अहं को दूर रखके टूटते दांपत्य जीवन को फिर से जुड़ने का विचार क्यों नहीं करते; हालांकि उन्हें यह विचार जरूर करना चाहिए।

माता –पिता के रोज के व्यवहार का बच्चों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। बच्चों के सामने जो घटित होता है उसे जानने की जिज्ञासा उनके मन में होती है। बंटी एक असाधारण बच्चा है। उसका स्वभाव जिज्ञासु है। बंटी के सामने जो भी होता है उसके बारे में सब कुछ जान लेना चाहता है चाहे वह स्थिति हो, व्यक्ति हो, या फिर वस्तु। मम्मी का रोना, मम्मी– पापा के बीच का झगड़ा, पापा का सर्किट हाउस में रहना जैसे आनेक बातों को जानने की जिज्ञासा बंटी के मन में है और अनजाने में इन बातों का बंटी के बालमन पर कुप्रभाव पड़ता है।

बंटी नौ वर्ष की उम्र में ही अच्छी बात कौन सी है, बुरी बात कौन सी है यह समझता है। टीटू की मां का ताना, अपनी मां की टीचर्स पार्टी के समय समझदारी पूर्ण व्यवहार कम उम्र में ही बंटी को बड़ा बना देता है। माता–पिता का झगड़ा खत्म करने की कोशिश, मां को सुखी रखने के लिए अपने मन को मारना साथ ही 'तलाक 'शब्द एक समस्या बनकर उसके सामने आता है परंतु इस संदर्भ में वह मां से कुछ नहीं पूछता क्योंकि उसे लगता है कि मम्मी इससे और व्यथित ना हो जाए। इतनी छोटी उम्र में ही मां की परेशानी, उदासी, दुख दूर करना वह अपना कर्तव्य समझता है। बंटी को देखते हुए यह सवाल उठता है कि एक छोटा सा बच्चा उसके सामने जो प्रश्न है उसे वह समझ भी नहीं पाता फिर भी वह उन्हें सुलझाने में लगा हुआ है। माता–पिता तो बड़े समझदार है फिर क्यों वह अपने रिश्ते को, अपने बच्चे के मन का विचार नहीं करते, क्यों अपनी मनमानी करते हैं जिसका कुप्रभाव उनके बच्चों पर पड़ता है।

बंटी अपने मम्मी के साथ रहता है। बंटी अपनी मां से बहुत प्यार करता है और शकुन भी बंटी से बहुत प्यार करती है। इसका परिणाम यह होता है कि बंटी जिद्दी बन जाता है। मां और उसके बीच कोई आए यह उसे पसंद नहीं है। शकुन के जीवन में डॉक्टर जोशी का आना बंटी के मन में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न कराता है। अपनी मां और डॉ जोशी की नजदीकियां बंटी के मन को आक्रोश से भर देती है। शकुन और डॉक्टर जोशी के शादी के बाद बंटी का पुराना परिवेश, घर और अतीत सब कुछ बिखर जाता है। इस बात का बंटी के मन पर गहरा आघात होता है।

बंटी संवेदनशील बच्चा है। पारिवारिक विघटन के कारण बंटी को मां का प्यार तो मिलता है पर पापा के प्यार से वंचित रहना पड़ता है। उसके जीवन की यह निराशा उसे अंतर्मुखी बना देती है। नौ वर्ष तक मां का अत्यधिक प्यार बंटी को बौना बना देता है और अचानक डॉ.जोशी का शकुन के जीवन में आना और मां का बदला हुआ व्यवहार एवं बटता हुआ प्यार देखकर बंटी आत्मकेंद्रित हो जाता है। इतना ही नहीं इन बातों से उबकर जब वह पापा के साथ कलकत्ता जाता है तब वहां जाकर बंटी इन हालातों को दोबारा पाता है।पापा का प्यार मीरा और चीनू के कारण विभाजित होता है। यह बंटी बर्दाश्त नहीं कर पाता। वह सोचता है कि जब मैं पापा से दूर रहता था तो सब कुछ अच्छा अपना लगता था परंतु अब पापा के साथ रहकर भी वह साथ नहीं है की भावना उसके मन में उत्पन्न होती है। वह अपने आप में सिकुड़ा–सा रहता है। ''क्या हाल हो गया है बच्चे का? कितना सहमा– सहमा, डरा –डरा रहता है। कैसे

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

नहीं भेजू इसे हॉस्टल? यह जब सबसे कटकर रहेगा, अपने बराबरी के बच्चों के बीच में ही रहेगा तभी नॉर्मल होगा।"(३) बंटी माता– पिता का प्यार पाना चाहता था लेकिन मां का प्यार भी बढ़ बट गया और पिता का प्यार भी बट गया बंटी मात्र एकाकी हो गया। जो बच्चा अपने पिता के होते हुए किसी और पुरुष को पापा कहके नहीं बुलाता न ही किसी और को मम्मी। जो बच्चा अपने मां–बाप को एक करना चाहता था वही मां– बाप अपने बच्चों को अनाथ की भांति हॉस्टल भेजने की योजना बना रहे हैं। इससे बंटी के बाल मन में छिपी भावुकता, संवेदना घायल हो जाती है।

बंटी अपने तलाकशुदा माता–पिता को एक करके उनके साथ रहना चाहता है, लेकिन ऐसा नहीं हो पाता। इसलिए बंटी के मन में अंतर्द्वंद्व चलता रहता है। जब वह मम्मी के पास रहता है तो पापा के अभाव का और पापा के पास रहता है तो मम्मी के अभाव का अंतर्द्वंद्व उसे सताता है। अत्याधिक भावुक और संवेदनशील होने के कारण उसके अंदर भय की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।"बंटी का मन हो रहा है कह दे–वह बहुत– बहुत डरेगा। इस घर में तो वह अकेला सो ही नहीं सकता।... वह सारे दिन भी एक तरह से डरता ही रहा है। पता नहीं कैसा– कैसा डर।"(४)अतः वह डरा– डरा सा दुसरों से कटा हुआ रहता है। इसके कारण बंटी बिस्तर गीला करना, सपने में चीखना, डरना, पसीने से लथपथ होना जैसी अनेक समस्यांयों से ग्रस्त हो जाता है।

अतः बच्चे का समुचित विकास उसके माता–पिता दोनों के सामंजस्य से होता है लेकिन बंटी अपने मां– बाप के अलग हो जाने की पीड़ा को सबसे अधिक भोगता है। बंटी को अपने ममी– पापा के विवाह विच्छेद के कारण वह परिवेश, वह वातावरण, वह परिस्थितियां नहीं मिल पाती जो उसके बालसुलभ मन उसके जीवन में संतुलन और सहजता ला सके। परिणामतः उचित वातावरण न मिलने के कारण अत्यंत भावुक, संवेदनशील बंटी 'एबनार्मल' बनकर रह जाता है।पति– पत्नी का अलग होना एक कोमल,निरीह बच्चे की दुनिया का भयावह दुःस्वप्न बन जाता है।पति– पत्नी के इस द्वंद्व में सबसे अधिक वही पिसा जाता है,जो नितांत निर्दोष,निरीह और असुरक्षित है, वह है एक बच्चा। बंटी किन्ही दो–एक घरों में नहीं बल्कि आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा है,अलग–अलग संदर्भों में, अलग–अलग स्थितियों में। बंटी के साथ घटी यह घटना दया, करुणा और भावुकता पैदा करती हैं परंतु आज जब हम अनेकों परिवारों में पिसते ऐसे बंटी को देखते हैं तो इस दया और भावुकता के स्थान पर मन में धीरे–धीरे एक आतंक उभरने लगता है। वर्तमान समय में यह समस्या दिनों–दिन बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। अगर पति पत्नी का अहंभाव मां–बाप के कर्तव्य पर हावी ना हो जाए तो इस समस्या को सुलझा सकते हैं। मां– बाप अपने बच्चे की मानसिकता को समझते हुए बच्चा क्या चाहता है इस बात पर गौर करें तो इस सामाजिक समस्या का बढ़ता हुआ आतंक कम कर सकते हैं।

संदर्भ सूची:

1.आपका बंटी– मन्नू भंडारी,पृ. 29
2.आपका बंटी– मन्नू भंडारी,पृ. 42
3. आपका बंटी– मन्नू भंडारी,पृ. 144
4. आपका बंटी– मन्नू भंडारी,पृ. 146

Scanned with CamScanner